

भारत का सांस्कृतिक क्षरण: कारण और प्रभाव

डॉ. सुमन यादव

सह - प्राध्यापक

राजनीति विज्ञान विभाग, एसबीएसई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

शेख सराय, त्रिवेणी, नई दिल्ली-110017

मुख्य शब्द:

सांस्कृतिक क्षरण, भारतीय संस्कृति, भूमंडलीकरण, पश्चिमीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण, डिजिटल मीडिया, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक पहचान, स्वदेशी परंपराएँ, क्षेत्रीय भाषाएँ, लोक कलाएँ, पारंपरिक मूल्य, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक समरूपीकरण, युवा संस्कृति, अंतर-पीढ़ीगत अंतर, संस्कृति का व्यावसायीकरण, विरासत संरक्षण, सांस्कृतिक विविधता

उद्देश्य:

इस लेख का उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक क्षरण की अवधारणा की जांच करना और भारत की विविध सभ्यतागत विरासत के संदर्भ में इसके अर्थ को समझना। वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण, शहरीकरण, डिजिटल मीडिया प्रभाव और बदलते सामाजिक आर्थिक मूल्यों सहित भारत में सांस्कृतिक क्षरण के प्रमुख कारणों की पहचान करना। पारंपरिक प्रथाओं, भाषाओं, कला रूपों, रीति-रिवाजों और सामुदायिक जीवन पर आधुनिकीकरण और आर्थिक विकास के प्रभाव का विश्लेषण करना। समकालीन भारतीय पहचान को आकार देने और सांस्कृतिक समरूपीकरण में योगदान देने में मीडिया, प्रौद्योगिकी और लोकप्रिय संस्कृति की भूमिका का आकलन करना है।

सांस्कृतिक क्षरण के सामाजिक प्रभावों का पता लगाना, जैसे पहचान संकट, पीढ़ीगत अंतराल, स्वदेशी परंपराओं का कमजोर होना और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का नुकसान। जिसमें नीतिगत अंतराल और पाठ्यक्रम परिवर्तन सहित सांस्कृतिक संरक्षण या गिरावट को प्रभावित करने वाले राजनीतिक और शैक्षिक आयामों का मूल्यांकन करना शामिल है। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक निरंतरता पर सांस्कृतिक क्षरण के दीर्घकालिक परिणामों पर जोर देना तथा भारत की सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण के महत्व के बारे में पाठकों के बीच जागरूकता और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना एवं सांस्कृतिक संरक्षण, पुनरुद्धार और आधुनिकता के साथ परंपरा के स्थायी एकीकरण के लिए संभावित उपायों और रणनीतियों का सुझाव देना भी शामिल है।

सार:

सदियों की सभ्यतागत निरंतरता, विविधता और बहुलवाद से आकार लेने वाली भारत की सांस्कृतिक विरासत, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के दबाव में तेजी से क्षरण का अनुभव कर रही है। यह लेख पश्चिमीकरण, संस्कृति के व्यावसायीकरण, डिजिटल प्रभाव, भाषाई गिरावट, शहरीकरण और पारंपरिक सामाजिक संस्थानों के कमजोर होने सहित इसके प्रमुख कारणों का विश्लेषण करके भारत में सांस्कृतिक क्षरण की घटना की जांच करता है। यह भारतीय समाज पर इस क्षरण के प्रभावों की पड़ताल करता है, जैसे कि स्वदेशी ज्ञान

प्रणालियों का नुकसान, युवाओं के बीच पहचान संकट, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का एकरूपीकरण और स्थानीय परंपराओं और भाषाओं का हाशिए पर जाना ।

इन गतिशीलता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करके, लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे सांस्कृतिक क्षरण भारत की सामाजिक एकजुटता, अंतर-पीढ़ीगत निरंतरता और राष्ट्रीय पहचान के लिए चुनौतियाँ पैदा करता है । अध्ययन में शिक्षा, नीतिगत हस्तक्षेप, सामुदायिक भागीदारी और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत आधुनिक विकास के साथ कायम रहे ।

परिचय:

भारत दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है, जो अपनी गहन सांस्कृतिक गहराई, बहुलवाद और निरंतरता से प्रतिष्ठित है। इसकी संस्कृति में विविध भाषाएँ, रीति-रिवाज, अनुष्ठान, दर्शन, कला रूप और सामाजिक संस्थाएँ शामिल हैं जो सहस्राब्दियों में विकसित हुई हैं । परंपरागत रूप से, भारतीय संस्कृति पारिवारिक संरचनाओं, सामुदायिक प्रथाओं, मौखिक परंपराओं और धार्मिक और सामाजिक संस्थानों के माध्यम से कायम रही है । हालाँकि, हाल के दशकों में, इस सांस्कृतिक ताने-बाने में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है । यह सत्य है यह सत्य है की वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और आर्थिक उदारीकरण की ताकतों ने वैश्विक दुनिया के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और एकीकरण को गति दी है और इन विकासों ने समाज में प्रगति, कनेक्टिविटी और नवाचार लाए हैं, लेकिन उन्होंने स्वदेशी सांस्कृतिक मूल्यों और प्रथाओं के संरक्षण के लिए गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं । पश्चिमी उपभोक्तावाद, समरूप जीवन शैली, देशी भाषाओं के घटते उपयोग और बदलते सामाजिक मानदंडों ने पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान के क्रमिक क्षरण में योगदान दिया है, खासकर युवा पीढ़ियों के बीच ।

भारत का सांस्कृतिक क्षरण केवल अनुष्ठानों या रीति-रिवाजों का नुकसान ही नहीं है बल्कि इसका सामाजिक सामंजस्य, राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता पर गहरा प्रभाव पड़ता है । भारत की सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए आवश्यक सोच विकसित करने के लिए इस क्षरण के कारणों और प्रभावों को समझना आवश्यक है । अतः यह लेख भारत में सांस्कृतिक क्षरण के लिए जिम्मेदार कारकों की गंभीर जांच करेगा तथा आधुनिक युग में समाज, पहचान और मूल्यों पर इसके दूरगामी परिणामों का आकलन करना चाहेगा ।

भारत में सांस्कृतिक क्षरण के कारण:

वैश्वीकरण और पश्चिमी प्रभाव- वैश्वीकरण के कारण मीडिया, शिक्षा और उपभोक्तावाद के माध्यम से पश्चिमी संस्कृतियों के साथ मेलजोल बढ़ा है । हालाँकि इससे आर्थिक विकास हुआ है, इसने पश्चिमी जीवनशैली, फैशन, खान-पान की आदतों और मूल्यों को भी बढ़ावा दिया है, जोकि निसंदेह स्वदेशी परंपराओं और प्रथाओं की कीमत पर हो रहा है ।

तीव्र शहरीकरण और प्रवासन- शहरीकरण के परिणामस्वरूप पारंपरिक सामुदायिक जीवन टूट गया है । ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन से संयुक्त परिवार प्रणाली, स्थानीय रीति-रिवाज, त्यौहार और क्षेत्रीय भाषाएँ कमजोर हो रही हैं, जिससे उनकी जगह गहन एवं आधुनिक शहरी जीवनशैली आ रही है ।

मास मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभाव- टेलीविजन, सिनेमा, सोशल मीडिया और ऑनलाइन सामग्री अक्सर भौतिकवाद, व्यक्तिवाद और विदेशी सांस्कृतिक मानदंडों का महिमामंडन करते हैं। इसके चलते हैं पारंपरिक कला रूपों, लोक संगीत और क्षेत्रीय कथाओं को सीमित प्रतिनिधित्व मिलता है, जिससे युवा पीढ़ी के बीच रुचि घट रही है। देशी भाषाओं का पतन- शिक्षा और रोजगार के लिए अंग्रेजी और कुछ प्रमुख भाषाओं को तेजी से प्राथमिकता दी जा रही है। परिणामस्वरूप, कई क्षेत्रीय और जनजातीय भाषाएँ, साथ ही उनमें निहित सांस्कृतिक ज्ञान और परंपराएँ भी लुप्त हो रही हैं।

संस्कृति का व्यावसायीकरण- पर्यटन और लाभ के लिए सांस्कृतिक त्योहारों, रीति-रिवाजों और परंपराओं का तेजी से व्यवसायीकरण किया जा रहा है। इससे उनका आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व कम हो गया है, वे जीवित परंपराओं के बजाय महज दिखावे में तब्दील हो रही है।

सांस्कृतिक क्षरण के प्रभाव:

व्यक्ति, विशेषकर युवा, अपनी जड़ों और विरासत से कटा हुआ महसूस कर रहे हैं तथा सामाजिक मूल्य कमजोर हो रहे हैं। बड़ों के प्रति सम्मान, सामुदायिक बंधन और सामूहिक जिम्मेदारी जैसे पारंपरिक मूल्यों में धीरे-धीरे गिरावट आ रही है। संस्कृति का एकरूपीकरण हो रहा है तथा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को एक समान, वैश्वीकृत संस्कृति द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने का खतरा बढ़ गया है। जोकि पीढ़ीगत विभाजन की संभावनाओं को जन्म दे सकता है और इसके चलते पुरानी और युवा पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक दृष्टिकोण में अंतर होने से अक्सर गलतफहमी और सामाजिक तनाव का कारण बन सकता है। पारंपरिक कला और ज्ञान प्रणालियों का पतन होने से लोक कला, शिल्प, अनुष्ठान और स्वदेशी ज्ञान को उपेक्षा और विलुप्त होने का समना करना पड़ सकता है।

भारत की प्राचीन संस्कृति:

भारत की संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे विविध संस्कृतियों में से एक है, जो सदियों की परंपराओं, मान्यताओं और प्रथाओं से आकार लेती है। वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी परिवर्तन से प्रेरित सांस्कृतिक क्षरण, इस समृद्ध विरासत के लिए एक गंभीर चुनौती है। हालाँकि आधुनिकीकरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान अपरिहार्य और आवश्यक हैं, लेकिन उन्हें सांस्कृतिक पहचान खोने की कीमत पर नहीं आना चाहिए। एक संतुलित दृष्टिकोण जो प्रगति संरक्षण के साथ सह-अस्तित्व में हो तो आवश्यक है। सांस्कृतिक शिक्षा को बढ़ावा देकर, स्वदेशी भाषाओं और कलाओं का समर्थन करके और भारत की विरासत पर गर्व को बढ़ावा देकर ही, समाज यह सुनिश्चित कर सकता है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहेगी।

भारत की प्राचीन संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे सतत सभ्यताओं में से एक है, जो 5,000 साल से अधिक पुरानी है। इसका विकास कई महत्वपूर्ण चरणों और परंपराओं के माध्यम से हुआ। जो निम्नलिखितानुसार है:-

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व)- सबसे प्रारंभिक शहरी सभ्यताओं में से एक हड़प्पा, मोहनजोदारो जहां नियोजित शहर, जल निकासी प्रणालियाँ, ईंट के घर, व्यापार, बाट और मुहरों का उन्नत ज्ञान के साथ-साथ प्रकृति, जानवरों और शिव जैसी आकृतियों के प्रारंभिक रूपों की पूजा के अवशेष पाए जाते हैं।

वैदिक संस्कृति (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व)- वेदों पर आधारित (ऋग, साम, यजु, अथर्व) अनुष्ठान (यज्ञ), भजन और मौखिक परंपरा पर जोर, सामाजिक संगठन, वर्ण व्यवस्था में विकसित हुआ धर्म, कर्म और मोक्ष के प्रारंभिक विचारों का समावेश है।

धार्मिक एवं दार्शनिक परंपराएँ- हिन्दू धर्म में, पुनर्जन्म, कर्म और धर्म की अवधारणाएँ कालांतर से विद्यमान हैं। हिन्दू धर्म के महाकाव्य रामायण और महाभारत आध्यात्मिक ज्ञान पर केन्द्रित हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध धर्म और जैन धर्म महात्मा गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी द्वारा स्थापित किये गए जहां अहिंसा, ध्यान, नैतिक जीवन पर जोर दिया गया है और बाद में ये दोनों ही धर्म भारत वर्ष से पूरे एशिया में फैले।

कला, वास्तुकला और साहित्य- भारत में बने अद्भुत स्तूप, मंदिर, चट्टानों को काटकर बनाई गई अजंता, एलोरा जैसी गुफाएँ, धार्मिक विषयों पर आधारित मूर्तियाँ और पेंटिंग इसके साथ साथ भारत वर्ष की संस्कृत तथा साहित्य जिसमें वेद, उपनिषद्, पुराण एवं दक्षिण भारत का तमिल संगम साहित्य इत्यादि शामिल हैं ये सब भारत की प्राचीन समृद्ध संस्कृति का ही तो नमूना हैं।

विज्ञान और ज्ञान- भारत द्वारा गणितशास्त्र में प्रदान शून्य, दशमलव प्रणाली, बीजगणित तथा खगोल विज्ञान में ग्रहों की गति, कैलेंडर के आलावा चिकित्सा प्रदत्ति में आयुर्वेद एवं शल्य चिकित्सा (सुश्रुत) का आज भी विश्व में अलग स्थान हैं। भारत के प्राचीन शिक्षा केन्द्र जिसमें तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय शामिल हैं भारत को दुनिया के अग्रणीय देशों में खड़ा करते हैं।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन- संयुक्त परिवार व्यवस्था बड़ों और शिक्षकों का सम्मान, गुरु-शिष्य परंपरा, ऋतुओं और कृषि से जुड़े त्यौहार शारीरिक और मानसिक संतुलन के लिए योग और ध्यान भारत की विरासत के मजबूत स्तम्भ हैं।

व्यापार और वैश्विक प्रभाव- मेसोपोटामिया, रोम, दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापारिक संबंध, भारतीय विचारों का एशियाई कला, धर्म और शासन को प्रभावित करना तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, कलात्मक और समावेशी विचारधारा पर आधारित होना जो मनुष्य को प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच सामंजस्य स्थापित करके जीवन जीने पर केंद्रित थी का विश्व अनुयायी रहा है।

भारतीय सांस्कृतिक के क्षरण का प्रारम्भ:

कुछ विद्वान यह भी तर्क देते हैं कि भारत की सांस्कृतिक क्षरण की शुरुआती के संकेत बार-बार विदेशी आक्रमणों के बाद दिखाई देने लगे थे, लेकिन भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक अध्ययनों में आमतौर पर कहा जाता है कि भारत का सांस्कृतिक क्षरण औपनिवेशिक काल के दौरान शुरू हुआ, खासकर तब जब 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश औपनिवेशिकवाद की नीतिया लागू की गयी जिसमें स्वदेशी शिक्षा प्रणाली के तहत कार्यरत गुरुकुल एवं मदरसों को कमजोर किया गया तथा मैकाले मिनट 1835 के द्वारा पश्चिमी शिक्षा और मूल्यों को लागू किया गया। जिससे स्थानीय भाषाओं, कला, शिल्प और परंपराओं का पतन तथा शोषण हुआ और इससे सांस्कृतिक संस्थान कमजोर हो गयी। इन दमनकारी नीतियों ने उस मानसिकता को भी बढ़ावा दिया जो भारतीय संस्कृति को “हीन” के रूप में चित्रित करती थी।

आजादी से पहले तथा आजादी के बाद भारत का सांस्कृतिक क्षरण:

स्वतंत्रता से पहले भारत का सांस्कृतिक क्षरण (औपनिवेशिक काल)- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारत की सांस्कृतिक नींव पर गहरा प्रभाव डाला। जिसमें शिक्षा का पश्चिमीकरण हुआ तथा पारंपरिक गुरुकुल, मदरसे और पाठशालाओं का पतन हो गया। अंग्रेजी शिक्षा ने पश्चिमी मूल्यों को बढ़ावा दिया जबकि भारतीय ज्ञान प्रणालियों को घटिया बताया। मैकाले के मिनट 1835 ने संस्कृत, फारसी और स्वदेशी विज्ञान की कमर तोड़ दी। इसके अलावा देशी भाषाओं को हानि पहुंचाने के इरादे से प्रशासन में फारसी और क्षेत्रीय भाषाओं का स्थान अंग्रेजी को दे दिया गया। जिसके चलते स्वदेशी साहित्य और मौखिक परंपराओं ने संरक्षण खो दिया। भारतीय भाषाओं में सांस्कृतिक विश्वास घट गया और धार्मिक एवं सामाजिक विघटन पैदा हो गया तथा मौका पाकर मिशनरी गतिविधियों ने स्वदेशी विश्वास प्रणालियों को चुनौती दे डाली। औपनिवेशिक नीतियों ने सामाजिक संस्थाओं, व्यक्तिगत कानूनों में भी हस्तक्षेप किया।

यहां तक को सुधार आंदोलनों ने भी कभी-कभी अनजाने में लोगों को परंपराओं से दूर कर दिया। आर्थिक स्थिति एवं कारीगरी हुनर में भी गिरावट आई तथा ब्रिटिश औद्योगिक वस्तुओं के कारण पारंपरिक शिल्प, हथकरघा, धातुकर्म इत्यादि ध्वस्त हो गये। कारीगर समुदायों से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाएँ कमजोर हो गईं। भारतीयों को पश्चिमी संस्कृति को “आधुनिक” और भारतीय संस्कृति को पिछड़ी “ के रूप में देखना सिखाया गया। इससे अभिजात्य वर्ग में सांस्कृतिक हीन भावना पैदा हुई

स्वतंत्रता के बाद भारत का सांस्कृतिक क्षरण (1947 के बाद)- भारत के राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी सांस्कृतिक चुनौतियाँ नए रूपों में जारी रहीं। जिसमें वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के प्रभाव के कारण पश्चिमी जीवनशैली, फैशन, भोजन और मनोरंजन के साधन भारतीयता पर हावी होने लगे। पारंपरिक त्योहारों और मूल्यों का तेजी से व्यवसायीकरण होने लगा जो निरंतर जारी है। भाषा के प्रयोग में परिवर्तन आ गया और शिक्षा और रोजगार में भारतीय भाषाओं की तुलना में अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दी जाने लगी। शास्त्रीय और क्षेत्रीय साहित्य पढ़ने और लिखने में भी गिरावट दर्ज हुई। मीडिया, सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म इत्यादि स्थानीय परंपराओं और लोकप्रिय भारतीय संस्कृति के बजाय वैश्विक संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। यहां तक की लोक कलाएँ, रंगमंच और शास्त्रीय विधाएँ अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं।

भारतीयता की पहचान संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर हो गयी और उसका स्थान शहरीकरण एवं एकल परिवार व्यवस्था ने ले लिया। भारत वर्ष के परम्परागत अनुष्ठानों, रीति-रिवाजों और अंतर-पीढ़ीगत ज्ञान संचरण में भारी गिरावट आई। अफसोस का विषय तो यह है कि शिक्षा व्यवस्था की औपनिवेशिक संरचना एवं निरंतरता स्वतंत्रता के बाद भी शिक्षा व्यवस्था में बरकरार रही तथा भारतीय दर्शन, इतिहास और नैतिकता पर सीमित कार्य ही किया गया।

पाश्चात्य संस्कृति द्वारा भारतीय संस्कृति का क्षरण अथवा परिवर्तन:

पश्चिमी संस्कृति ने उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और शिक्षा प्रणालियों के माध्यम से भारत में प्रवेश किया जिसने सीधे भारतीय जीवनशैली और मूल्य पर प्रहार किया और नतीजा संयुक्त परिवार प्रणाली में गिरावट आ गई। सामूहिक पारिवारिक मूल्यों की अपेक्षा व्यक्तिवाद को प्राथमिकता मिलने लगी और एकल परिवार प्रणाली व्यवस्था पनपने लगी। विवाह, रिश्तों और अधिकारों के प्रति जनमानस के दृष्टिकोण में बदलाव आ गया।

अंग्रेजी के प्रभुत्व के कारण भारतीय भाषाओं का पतन होने लगा तथा भारतीय भाषाएँ अपनी पहचान खोने लगी। शहरी युवा अक्सर पश्चिमी लहजे, पहनावे और आदतों को “आधुनिक” या “श्रेष्ठ” मानने लगे जिससे निश्चित तौर पर युवा पीढ़ी के दिलो दिमाग में क्षेत्रीय सांस्कृतिक गौरव की हानि होने लगी और उनकी सोच में परिवर्तन होने लगा।

पश्चिमी ब्रांड, फास्ट फूड, फैशन और वेलेंटाइन डे, हैलोवीन आदि जैसे पश्चिमी त्यौहार ने भारतीयता के स्थायी स्तम्भ दिवाली, होली, ईद, भैयादूज जैसे महान त्यौहारों कि रौनक को कम करने का काम किया। जिसके दूरगामी प्रभाव के रूप में पारंपरिक मानदंडों, अनुष्ठानों और मूल्य प्रणालियों का धीरे-धीरे कमजोर होना सामने आया।

एक मुख्य कारक के रूप में भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी सिनेमा के प्रभाव को जरूर माना जा सकता है जोकि सीधे सीधे हॉलीवुड फिल्मों जुड़ा हुआ है जिसमे डेटिंग संस्कृति, यौन स्वतंत्रता, भौतिक सफलता को जीवन का लक्ष्य मान बैठना दिखाया गया। परिणामस्वरूप भारतीय युवा तेजी से पश्चिमी चरित्रों पर अपना व्यवहार ढालने लगे। यहां तक कि भारतीय सिनेमा भी हॉलीवुड को अपनाकर अपने आपको बॉलीवुड कहने लगा इसके आलावा फिल्मों में पश्चिमी कहानी सुनाना, आइटम नंबर, स्पष्ट सामग्री, ग्लैमर-केंद्रित आख्यान करने लगा और भारतीय नैतिकता, ग्रामीण जीवन और सामाजिक सुधार पर केन्द्रित फिल्मों का पतन होने लगा। तत्पश्चात सांस्कृतिक क्षरण को तेज करने में पश्चिमी सोशल मीडिया ने रही सही कसर पूरी कर दी चूंकि सोशल मीडिया परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली और तेज एजेंट है।

युवा पश्चिमी प्रभावशाली लोगों की नकल करते हैं और उन्हीं का पहनावा बोलचाल की भाषा और जीवन शैली अपनाते हुए उनके फॉलोअर्स बन जाते हैं। वे अनजाने में भारतीय सामाजिक मान्यताओं और पारंपरिक ज्ञान का हास कर बैठते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप आज भारतीय लोक कलाएँ, मौखिक परंपराएँ, स्थानीय रीति-रिवाज, त्यौहार और अनुष्ठान अक्सर “इंस्टाग्राम सौंदर्यशास्त्र” तक सीमित रह गए हैं। समाज में उत्पन्न अति-व्यक्तिवाद, स्व-ब्रांडिंग, त्वरित संतुष्टि की सोच सामुदायिक बंधनों और सांस्कृतिक निरंतरता को कमजोर करते हैं। पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था और स्कूली पाठ्यक्रम अक्सर भारतीय बौद्धिक परंपराओं की उपेक्षा करते हुए पश्चिमी विचारकों का महिमामंडन करते हैं। इसके साथ-साथ मीडिया पश्चिमी जीवनशैली को “प्रगतिशील” और भारतीय परंपराओं को “पिछड़ी” के रूप में चित्रित करता है जो नौजवान पीढ़ी में भारतीय संस्कृति के प्रति कुंठा की भावना को पैदा करते हैं।

पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर सकारात्मक प्रभाव का आंकलन करें तो लैंगिक समानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक स्वभाव की प्राप्ति तथा वैश्विक मंचों से योग एवं आयुर्वेद का वैश्विक स्तर पर प्रचार शामिल हैं। भारतीय सिनेमा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार के युग के साथ भारत अपनी पहचान पूरी तरह शाबित करते हुए इंडो-वेस्टर्न हाइब्रिड संस्कृति का निर्माण कर रहा है। पश्चिमी संस्कृति, सिनेमा और सोशल मीडिया ने भारतीय समाज को महत्वपूर्ण रूप से नया आकार दिया है, जिससे युवाओं में सांस्कृतिक कमजोरियां पैदा होने का संकट दूर हो गया है। हालाँकि, सांस्कृतिक क्षरण अपरिहार्य नहीं है क्योंकि शिक्षा, मीडिया जिम्मेदारी और सांस्कृतिक गौरव के प्रति सचेतनात्मक प्रयासों से भारत पश्चिमीकरण के बिना भी आधुनिकीकरण को प्राप्त कर सकता है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का आलिंगन भारतीय संस्कृति का पूर्णतः क्षरण नहीं बल्कि परिवर्तन है।

भारत का सांस्कृतिक क्षरण एक नजर में:

1400-1526: उत्तर मध्यकालीन भारत- क्षेत्रीय सल्तनतों के अधीन भारत निरंतर इंडो-फारसी सांस्कृतिक, भाषा संश्लेषण, कला, प्रशासन, दरबारी संस्कृति में तब्दील रहा और भारतीय कला और वास्तुकला ने फारसी तत्वों को एकीकृत किया।

1526-1707: मुगल साम्राज्य (प्रारंभिक आधुनिक काल)- इस काल में भारतीय संस्कृति फारसी-इस्लामी तत्वों से प्रभावित रही जिससे साहित्य, संगीत और समग्र भारत-इस्लामिक संस्कृति का विकास हुआ ।

1700 का दशक: मुगल शक्ति का पतन और क्षेत्रीय राज्यों का उदय- मुगल सांस्कृतिक प्रभुत्व में गिरावट होने से क्षेत्रीय ताकतों का पनपना एवं यूरोपीय लोगों और कंपनियों के साथ संपर्क तथा व्यापार जिसमें पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी इत्यादि शामिल है ।

1757-1857: ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी शासन- प्लासी के युद्ध से ब्रिटिश राजनीतिक नियंत्रण स्थापित हो गया। पश्चिमी शिक्षा, अंग्रेजी भाषा, कानूनी और प्रशासनिक प्रणालियों का आगमन हुआ। इससे भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी प्रभाव की पहली बड़ी लहर शुरू हुई तथा पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों जैसे गुरुकुलों का प्रभाव कम होने लगा तथा पश्चिमी बुद्धिजीवी, विज्ञान, न्यायिक विचार भारतीय समाज में प्रवेश करते गए।

1800-1930 का दशक: ब्रिटिश साम्राज्य और सांस्कृतिक बदलाव- पश्चिमी सांस्कृतिक पूर्णतया अपनी पैठ जमा चुकी थी और अंग्रेजी शिक्षा नीतियां, आधुनिक कानून, नौकरशाही, रेलवे, साहित्य और प्रिंट मीडिया सभी ब्रिटिश संस्कृति के रंग में रंगे हुए थे ।

1857-1947: ब्रिटिश शासन चरम पर- पश्चिमी बुद्धिवाद और संस्थाओं का सांस्कृतिक प्रभाव । सुधार आंदोलन जैसे, सती प्रथा का उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह आदि आंशिक रूप से पश्चिमी-शिक्षित सुधारकों के तहत शुरू हुए। संयुक्त परिवार व्यवस्था बदलने लगी और आधुनिक शिक्षा और कानूनों के तहत जाति और विवाह प्रथाओं में बदलाव आना शुरू हो गया ।

1947 के बाद: स्वतंत्र भारत- पश्चिमी प्रभाव जारी रहा । शिक्षा व्यवस्था और अंग्रेजी भाषा, सिनेमा इत्यादि पर लोकप्रिय संस्कृति, वैश्विक मीडिया के परिपेक्ष में पारंपरिक और पश्चिमी तत्वों के बीच सांस्कृतिक पहचान बचाने के लिए बातचीत तेज हो गई।

आधुनिक युग (1990 के बाद)- वैश्वीकरण और डिजिटल मीडिया आने के बाद भारत की अर्थव्यवस्था विश्व स्तर पर खुली । पश्चिमी मीडिया, उपभोक्ता संस्कृति, वैश्विक ब्रांडों के प्रति एक्सपोजर बढ़ा। पश्चिम से आयातित सिनेमा और मीडिया युवा शहरी आबादी को प्रभावित करने लगा । वर्तमान में सोशल मीडिया, इंटरनेट, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म विशेष रूप से युवाओं के बीच पश्चिमी सांस्कृतिक मानदंडों जैसे फैशन, व्यवहार, मूल्यों को बढ़ा रहे हैं ।

भारत का सांस्कृतिक क्षरण रोकने के उपाय:

भारत के सांस्कृतिक क्षरण को रोकने का मतलब आधुनिकता या पश्चिम को अस्वीकार करना नहीं है। इसका मतलब आधुनिक दुनिया के साथ अपनी शर्तों पर जुड़ते हुए भारतीय सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करना है। जिसके लिए भारतीय दर्शन, इतिहास, राजनीतिक विचार, कला और विज्ञान को एकीकृत करने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आलोचनात्मक रूप से पढ़ाया जाए पौराणिक रूप से नहीं इसके साथ-साथ तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा मिले। भाषा के संरक्षण के लिए स्कूलों और उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं को मजबूत किया जाए। जिसमें द्विभाषी या त्रिभाषी क्षमता को प्रोत्साहित करना भी शामिल है। भारतीय भाषाओं, कलाओं और परंपराओं को

पुनर्जीवित करने के क्रम में स्थानीय कलाओं का समर्थन करें, लोक संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प की परंपराओं को पुनर्जीवित किया जाए युवा कलाकारों के लिए सांस्कृतिक फेलोशिप की स्थापना की जाए।

भारतीय त्योहारों को केवल प्रदर्शन के साथ नहीं, बल्कि अर्थ के साथ मनाने को प्रोत्साहित किया जाए। सामाजिक बंधन को बढ़ावा देने वाले सामुदायिक अनुष्ठानों को बहाल करते हुए जिम्मेदार मीडिया, सिनेमा और डिजिटल प्लेटफॉर्मों का इस्तेमाल किया जाए। सिनेमा में सुधार करते हुए ऐसी फिल्मों को प्रोत्साहित किया जाए जो भारतीय सामाजिक वास्तविकताओं को चित्रित करें, नैतिक दुविधाओं, सामुदायिक मूल्यों, बहुलवाद को बढ़ावा देना की पश्चिमी देशों का अंधानुकरण करें। सोशल मीडिया को जागरूक तथा जिम्मेवार बनाएं जो भारतीय रचनाकारों, भाषाओं और कथाओं का ऑनलाइन प्रचार करें तथा भारतीय संस्कृति को डिजिटल स्पेस में प्रतिस्पर्धी बनाएं। परिवार और सामुदायिक संस्थाओं को मजबूत करते हुई सांस्कृतिक इकाई के रूप में परिवार व्यवस्था को मजबूत बनाएं। पुस्तकालय, सांस्कृतिक केंद्र, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि सामाजिक स्थान भी हों।

देश की सांस्कृतिक नीति का निर्माण हो जिसमें योग, आयुर्वेद, शिल्प और बौद्धिक संपदा के ज्ञान का संरक्षण किया जाए। सांस्कृतिक एकाधिकार को विनियमित करते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्मों और सोशल मीडिया का उचित प्रयोग करते हुए विशुद्ध भारतीय सामग्री और भाषाओं के लिए स्थान सुनिश्चित हों। कारीगरों, कलाकारों, स्थानीय उद्योगों को समर्थन देते हुए इन्हें आजीविका से जोड़ें। क्योंकि एक संस्कृति तब जीवित रहती है जब लोग उससे जीवित रह सकते हैं, न कि केवल उसकी प्रशंसा करने से। व्यक्तिगत जिम्मेदारी सबसे महत्वपूर्ण हैं प्रत्येक व्यक्ति सांस्कृतिक अस्तित्व में योगदान दे तथा अपनी मातृभाषा गर्व से बोलें एवं भारतीय सामग्री का उपभोग करें हालाँकि इसके लिए आत्मविश्वास, रचनात्मकता और निरंतरता की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष:

भारत का सांस्कृतिक क्षरण उपनिवेशवाद, पश्चिमी शिक्षा, वैश्वीकरण, मास मीडिया, सिनेमा और सोशल मीडिया द्वारा संचालित एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। इन ताकतों ने पारंपरिक भारतीय मूल्यों को बदल दिया है, स्वदेशी भाषाओं को कमजोर कर दिया है, पारिवारिक संरचनाओं को नया आकार दिया है और समुदाय-उन्मुख जीवन के बजाय उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है। पश्चिमी सांस्कृतिक आख्यानो के प्रभुत्व ने अक्सर, विशेष रूप से युवाओं के बीच, पहचान का संकट पैदा कर दिया है, जिससे वे धीरे-धीरे भारत की सभ्यतागत जड़ों से अलग होते जाने को अग्रसर हैं। यद्यपि सांस्कृतिक क्षरण के प्रभाव पूरी तरह से नकारात्मक नहीं हैं क्योंकि वैश्विक विचारों के संपर्क ने सामाजिक सुधार, लैंगिक समानता, वैज्ञानिक सोच और लोकतांत्रिक मूल्यों की बढ़ोतरी में सकारात्मक योगदान दिया है। हालाँकि, जब नकल समझ की जगह ले लेती है और आधुनिकता पश्चिमीकरण का पर्याय बन जाती है, तो सांस्कृतिकता कमजोर पड़ना अपरिहार्य हो जाती है।

आज भारत के सामने चुनौती परिवर्तन का विरोध करने की नहीं है, बल्कि इसका बुद्धिमता से प्रबंधन करने की है इसके साथ-साथ सांस्कृतिक शिक्षा को मजबूत करना, भाषाओं और परंपराओं की रक्षा करना, जिम्मेदार मीडिया को प्रोत्साहित करना और भारत की बहुलवादी विरासत पर गर्व को बढ़ावा देना प्राथमिकता होनी चाहिए। सांस्कृतिक अस्तित्व स्मृतिलोप के बिना सदा विकास में निहित है जहां भारत अपनी ऐतिहासिक, नैतिक और सांस्कृतिक नींव में निहित रहते हुए आधुनिकीकरण की नई गाथा लिख सकता है। क्योंकि जो राष्ट्र अपनी संस्कृति को भूल जाता है वह भौतिक रूप से तो प्रगति कर सकता है परंतु उसे अपनी आत्मा को खोने का जोखिम उठाना पड़ता है।

REFERENCES:

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर – राष्ट्रवाद
2. धरमपाल - सुंदर वृक्ष
3. अरबिंदो - भारतीय संस्कृति की नींव
4. एनसीईआरटी - भारतीय समाज और संस्कृति
5. देवदत्त पटनायक - भारतीय संस्कृति, कला एवं विरासत
6. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल - कला और संस्कृति: भारत में कला और संस्कृति की खोज
7. बलदेव भाई शर्मा - भारत: संस्कृतिक चेतना का अधिष्ठान